***श्री रामचंद्रजी आरती***

आरती कीजे श्री रामचंद्र की ।

दुष्टदलन सीतापति जी की ॥

पहली आरती पुष्पन की माला ।

काली नाग नाथ लाए गोपाला ॥

दूसरी आरती देवकी नंदन ।

भक्त उबारन कंस निकंदन ॥

तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे ।

रत्न सिंहासन सीता राम जी सोहे ॥

चौथी आरती चहुं युग पूजा ।

देव निरंजन स्वामी और न दूजा ॥

पांचवीं आरती राम को भावे ।

रामजी का यश नामदेवजी गावें ॥